E-Learning Study Material

By - Prof. (Dr) YADWENDRA SINGH
MAHARAJA COLLEGE, ARA
VKS UNIVERSITY, ARA, BIHAR

B.A. Economics Hons Second Year
Paper-third.

Present Position of Iron and Steel Industry in India :-

भारत 2018 में 106.5 मीट्रिक टन उत्पादन के साथ विश्व का दूसरा सबसे बड़ा ~~इस्पात~~ इस्पात उत्पादक देश है। भारतीय इस्पात क्षेत्र में वृद्धि लौह अयस्क और लागत प्रभावी श्रम जैसे कच्चे माल की प्रचुर उपलब्धता से प्रेरित है। परिणामतः भारत के विनिर्माण उत्पादन में इस्पात क्षेत्र का बड़ा योगदान रहा है। वित्तवर्ष 2019 में भारत की इस्पात उत्पादन क्षमता बढ़ कर 137.975 मिलियन टन हो गयी है। भारत 2019 में ~~कच्चे~~ कच्चे इस्पात के उत्पादन के साथ विश्व
111.2 मिलियन टन
का दूसरा सबसे बड़ा इस्पात उत्पादक बन कर जापान से आगे निकल गया।

भारतीय इस्पात उद्योग अत्याधुनिक मिलों के साथ सुसज्जित हो चुका है। यहां लगातार आधुनिकीकरण की प्रक्रिया चल रही है। जिससे इस उद्योग का विकास निरंतर हो रहा है।

Scanned with CamScanner

आज यह कहा जाता है कि हम लौह युग में रहते हैं। अपनी कठोरता, ताकत और स्थायित्व के कारण जिस आसानी से इसे ढाला जा सकता है और किसी भी वांछित आकार में काम किया जा सकता है क्योंकि उत्पादन के माडर्न तरीकों के तहत ~~इसका~~ ~~उत्पादन~~. ~~यह काफी सस्ता~~ ~~इसका निर्माण~~

इसका निर्माण काफी सस्ता हो जाता है। यह मानव जीवन में अत्यधिक इस्तेमाल होने वाला धातु है। इसका लचीलापन भी इसे काफी लोकप्रिय बना चुका है जिसके फलस्वरूप अधिकांश सहायक उद्योग जैसे आटोमोबाइल लोकोमोटिव, रेल ट्रैक, जहाज निर्माण, मशीन निर्माण, पुल, बांध, बहुमंजिली इमारतें, और अन्य औद्योगिक तथा वाणिज्यिक ~~गतिविधि~~ गतिविधियों का आधार स्तम्भ, लोह एवं स्पात उद्योग ही है। लोहे एवं स्पात की प्रति व्यक्ति खपत किसी देश के औद्योगीकरण और आर्थिक विकास स्तर का मानक है।

भारतीय शुरुआती दौर से ही लोहे को गलाने की अपनी तकनीक के लिए जाने जाते हैं। लेकिन माडर्न की तर्ज पर पहली लोहे की एक स्टील यूनिट 1830 में तमिलनाडु के पोर्टो नोवा में स्थापित की गयी थी।

लेकिन 1866 में असफल होने के कारण बन्द हो गया

आधुनिक लोहा एवं इस्पात उद्योग की वास्तविक शुरुआत 1907 में हुई होनकी जब टाटा आयरन एंड स्टील कंपनी (TISCO) की स्थापना जमशेदपुर (साकची) में की गयी थी। इंडियन आयरन एंड स्टील कंपनी (IISCO) की स्थापना 1919 में बर्नपुर में हुई थी, इसके बाद 1923 में भद्रावती (अब विश्वेश्वरैया आयरन एंड स्टील वर्क्स) में मैसूर स्टील वर्क्स की स्थापना की गयी।

आजादी के बाद लौह एवं इस्पात के क्षेत्र में उत्पादन की गति तेज हो गयी। 1950-51 में भारत ने 16.9 लाख टन पिग आयरन का उत्पादन किया। प्रथम पंचवर्षीय योजना के दौरान लौह एवं इस्पात उद्योग के अत्यधिक विकास की परिकल्पना की गयी थी। आगे यह द्वितीय पंचवर्षीय योजना के दौरान भिलाई, राउरकेला और दुर्गापुर में तीन एकीकृत इस्पात परियोजनाओं को शुरू किया गया।